MASA-05

December - Examination 2019

M.A. (Final) Sanskrit Examination

गद्य तथा काव्य

Paper - MASA-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

निर्देश : यह प्रश्न पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड – 'अ' **$8 \times 2 = 16$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) (i) बाणभट्ट की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

(ii) कादम्बरी कथा का मूल उत्स क्या है?

(iii) गद्य के दो भेदों के नाम लिखिये।

(iv) माघकाव्य में तीन गुण कौन से हैं?

(v) शिशुपाल पूर्वजन्म में कौन थे?

(vi) सभा भवन में श्रीकृष्ण किससे विचार विमर्श करते हैं?

(vii) शिवमहिम्नः स्तोत्र के रचनाकार का नाम लिखिये।

(viii) 'विक्रमांकदेवचरितम्' महाकाव्य का मूल आधार क्या है?

खण्ड – ब **4 × 8 = 32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी में कीजिए।

आसीच्च मे मनसि अहो! मोहप्रायमेतेषां जीवितम्, साधुजन–गर्हितञ्च चरितम्। तथाहि पुरूष–पशितोपहारे धर्म्मबुद्धिः, आहारः साधुजनविगर्हितो मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतम्, उपदेष्टारः, सदसतां कौशिकाः, प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्, परिचिताः श्वानः, राज्यं शून्यास्वटवीषु, आपानकमुत्सवः, मित्राणि क्रूरकमसाधनानि घनूंषि, सहाया विषदग्धमुखा भुजङ्गा इव सायकाः, गीतमुत्साहकारि मुग्धमृगाणाम्, कलत्राणि बन्दीगृहीताः परयोषितः, क्रूरात्मभिः शार्दूलैः सह संवासः, पशुरूधिरेण देवतार्चनम्, मांसेन बलिकम्, चौर्येण जीवनम्, भूषणानि भुजङ्गमणयः वनकरि–मदैरङ्गरागः, यस्मिन्मेव कानने निवसन्ति, तदेवोत्खानमूलशेषतः कुर्वते।

अथवा

एकतमस्तु जरच्छबरस्तस्मात् पुलिन्द वृन्दादनासादित हरिण–पिशितः पिशिताशन इव विकृतदर्शनः पिशितार्थी तस्मिन्नेव तरूतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत। अन्तरितेच तस्मिन् शबरसेनापतौ स जीर्णशबरः पिबन्निवास्माकमायूंषि रूधिरबिन्दुपाटलया कपिलभ्रूलतापरिवेशमीषणया दृष्टवा गणयन्निव शुककुल–कुलायस्थानानि श्येन इव विहगामिषास्वाद–लालसः सुचिरमारुरूक्षुस्तं वनस्पतिमामूलादपश्चत्। उत्क्रान्तमिव तस्मिन् क्षणे तदालोकन – भीतानां शुक–कुलानामसुभिः।

3) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

ममतावन्मतमिदं श्रूयतामङ्ग वामपि।
ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धः कार्यवस्तुनि।।

अथवा

षड्गुणाः शक्तयस्तिस्त्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः।
ग्रन्थानधीत्य व्याकर्त्तुमिति दुर्मेघसोऽप्यलम्।।

4) निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिये।

गृह्णन्तु सर्वे यदिवा यथेष्टं
नास्ति क्षति कापिकवीश्वराणाम्।
रत्नेषु लुप्तेषु बहुएव मर्त्यै–
रद्यापि रत्नाकर एव सिन्धुः।।

अथवा

न दुर्जनानामिह कोऽपि दोषस्–
तेषां स्वभावो हि गुणासहिष्णुः।
द्वेष्यैव केषामपिचन्द्रखण्ड–
विपाण्डुरा पुण्ड्रकशर्कराऽपि।।

5) कादम्बरी में वर्णित प्रकृति–चित्रण पर एक लेख लिखिये।

6) 'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्' इस कथन की समीक्षा कीजिये।

7) माघकाव्य के रस परिपाक पर एक लेख लिखिये।

8) विक्रमांकदेवचरितम् के आधार पर बिल्हण की भाषा शैली पर लेख लिखिये।

9) शिवमहिम्नः स्तोत्र की आध्यात्मिकता पर लेख लिखिये।

खण्ड – स $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) कादम्बरी में वर्णित प्रेम–सौन्दर्य पर लेख लिखिये।

11) 'माघ राजनीति के महापण्डित है' इस कथन की समीक्षा कीजिये।

12) ''विक्रमांकदेवचरितम् में वैदर्भी रीति के सफल प्रयोग किये गये हैं'' इस कथन की समीक्षा कीजिये।

13) स्तोत्र काव्य परम्परा में शिवमहिम्नः स्तोत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है'' समीक्षा कीजिये।

———